Indian J.Soc & Pol. 03(03):2016:65-68 **ISSN 2348-0084 (PRINT)**
(Special Print Issue: September, 2016) **ISSN 2455-2127(ONLINE)**

नारीवादः एक समीक्षा

शिव प्रकाश सिंह[1]

[1]प्रवक्ता, नागरिकशास्त्र, एस0 प्र0 इ0 का0 पड़री कला उन्नाव, उ0प्र0, भारत

ABSTRACT

नारीवाद समाज के पितृसत्तात्मक संचरना के विरूद्ध एक सशक्त विचारधारा के रूप में सामने आयी, जिसने उदारवादी तथा मार्क्सवादी मान्यताओं का खण्डन करते हुए एक नया वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया । नारीवादी विचारधारा का उद्देष्य पुरूषों पर श्रेष्ठता स्थापित करने की आंकाक्षा न होकर समाज में नारीवादी मूल्यों को स्थापित करना है। इसके अनुसार समाज में अब तक पितृसत्तात्मक मूल्य ही प्रभावी रहे हैं। इन मूल्यों में तर्क,विवेक,हिंसा तथा आक्रमण आदि को रखा जा सकता है । दूसरी ओर नारीवादी मूल्यों में देख भाल, निकटता, सम्बन्धों का निर्माण व सहानुभूति जैसे मूल्य आते है ।नारीवादी विचारकों के मत में इन नारीवादी मूल्यों की स्थापना से एक नए राज्य व समाज का निर्माण सम्भव है ।जो लोकतंत्र के ज्यादा करीब होगा। इन मूल्यों की स्थापना से संघर्ष के स्थान पर सहयोग, विषमता के स्थान पर समानता को प्राप्त किया जा सकता है ।

***KEY WORDS:** नारीवाद, परिवार, पितृसत्तात्मक, मातृसत्तात्मक*

नारीवादी विचारको के अनुसार पितृसत्तात्मक सत्ता के प्रभावी होने का मूल कारण महिलाओं को निजी जीवन तक सीमित कर देना है । अतः सार्वजनिक जीवन में भाग न लेने के कारण समाज में महिलाओं की स्थिति पिछड़ गयी। इसी क्रम में प्रख्यात नारीवादी विचारक सिमाद द बुवा ने अपनी पुस्तक दी सेकण्ड सेक्स में नारीवादी मान्यताओं को स्पष्ट किया है । बुवॉ ने ऐतिहासिक अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष दिया कि सम्पूर्ण मानव संस्कृति के इतिहास में नारी को सदैव द्वितीय श्रेणी का स्थान प्राप्त हुआ, तथा सदैव पुरूष प्रधानता की स्थिति ही बनी रही। सियाद बुआ के अनुसार समाकालीन समय में गर्भ निरोधक संसाधनो व नौकरी की उपलब्धता ने नारी को यह अवसर प्रदान किया है कि वह अपनी स्वायत्त पहचान बना सके। इसी क्रम में उग्र नारीवदी आन्दोलन में नारी व पुरूष के मध्य भेंदो पर जोर देते हुए कहा कि पुरूष के साथ समानता के स्थान पर नारी को स्वयं अपने मूल्यों को विकसित करना होगा तभी एक सम्मूर्ण सांस्कृतिक क्रान्ति का उदय होगा। इसी क्रम में जूनियर मिलेट के अनुसार महिलाओं की स्थिति अन्य समूहो के समान नही देखी जा सकती है । क्योंकि महिलाएं मानवता के आधे भाग का निर्माण करती है ।

नारीवादी आन्दोलन मुख्यतः दो चरणों से होकर गुजरा प्रथम लहर 19वीं सदी से 20वीं सदी के प्रारम्भ तक रही जिसका मुख्य उद्देश्य स्त्रियों के लिए मताधिकार प्राप्त करना था, और विश्व युद्ध आते–आते अधिकाश देशों में यह उद्देश्य पूरा हो गया। 1960 के दशक में दूसरी लहर प्रारम्भ हुई। इसे प्रारम्भ करने का श्रेय पेट्टी फिड़स को जाता है । इन्होने Problem with Unname (अनाम समस्या) के नाम से स्त्री की एक मुख्य चिन्ता को उठाया और कहा कि पुरूषवादी समाज ने नारीत्व,मातृत्व और घरेलू पन को गौरान्वित किया और इसके नाम पर स्त्रियों को सार्वजनिक क्षेत्र में भाग लेने से वंचित कर दिया। स्त्रियां घर में कैद होकर रह गयी। उनकी भूमिका पत्नी, माता गृहणी के रूप मे सीमित हो गयी इस तरह राजनीतिक क्षेत्र में स्त्रियों की भागीदारी नगण्य हो गयी। इन मुद्दों को नारीवादी आन्दोलन उठाने का प्रयास करता है ।

नारीवादी मान्यताओं का विश्लेषण निम्न विचारधाराओं के अन्तर्गत किया जा सकता है उदारवादी नारीवादी विचारधारा –यह विचार धारा यह मानकर चलती है कि योग्यता और क्षमता में स्त्री और पुरूष समान है । फिर भी स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार प्राप्त नहीं है । जो स्त्रियों की निम्न स्थित का कारण है । अतः स्त्रियों को भी पुरूषों के समान अधिकार प्रदान करना चाहिए। समान नागरिकता देनी चाहिए। इन्ही कारण से उदारवादी नारीवादी को Equal Right to Feminist कहा जाता है ।

यह विचारधारा आमूल परिवर्तनवादी न होकर सुधारवादी तरीका अपनाता है ।यह समाज की मूलभूत संरचना में बदलाव किए विना, अधिकारी के माध्यम से स्त्रियों की स्थिति

1.Corresponding Author

सुधारना चाहते है । इन्होने उदारवादी मूल्यों के आधार पर कहा कि व्यक्ति विवेकशील प्राणी है । सभी व्यक्ति नैतिक रूप से समान है। अतः लिंग,धर्मरंग के आधार पर भेदभाव अनुचित है। पुरूषों की तरह भी विवकेशील प्राणी है । उन्हे भी सभी अधिकार मिलना चाहिए। इन्ही बातो को जे0एस0 मिल Subjection for Womanमें किया है ।

नारीवादी समाजवादियों का विचार है कि पूँजीवाद और निजी सम्पत्ति ने स्त्री की हीन स्थिति का कारण सबसे पहले ऐन्जिल्स ने अपनी पुस्तक ओरिजिन ऑफ फेमिली प्राइवेट प्रापर्टीज दी स्टेट में यह दिखाया गया है कि पूंजीवाद से पहले के समाजों में Mother Right(मातृत्व अधिकार) के रूप में स्त्री को भौतिक सम्पत्ति में हिस्सा था।उन्हे अधिकार प्राप्त था। पूंजीवाद ने इस अधिकार को समाप्त कर दिया। यह स्त्रियों की ऐतिहासिक हार थी, जिसमें उसे पुरूष ने हीन बना दिया।

समाजवादी नारीवाद यह मानता है कि अधिकारों की समानता से स्त्री की स्थिति में सुधार नही होगा,इसके लिए पूजीवाद के पितृ सत्ता को तोड़ना पडेगा। यह मानते हैं कि स्त्रियों को घरेलू क्षेत्र में सीमित कर देने से पूंजी के अधिकांश हित बुरे होते है । जिसके लिए निम्न उदाहरण हैं।

1. पूंजीवादी समाज बिना मूल्य चुकता किए स्त्री के घरेलू श्रम का उपयोग अप्रत्यक्ष रूप से करता है ।
2. पूजीवादी समाज में स्त्रियॉ संकटकाल के लिए आरक्षित श्रम की भॉति है। जिन्हे आवश्यकतानुसार श्रम पर लगाया जा सकता है। और आवश्यकता समाप्त होने पर हटा लिया जाता है ।
3. स्त्रियॉ बच्चों को जन्म देकर उनका पालन, पोषण करके अगली पीढ़ी के लिए श्रमिक तैयार करती है ।

अतः इस नारीवाद का मानना है कि स्त्री का वास्तविक शोषण निजी सम्पत्ति के संरक्षक रहे हैं। अतः स्त्री की मुक्ति के लिए निजी सम्पत्ति की समाप्ति ही समाजवादी नारीवाद का उद्देश्य है ।

राज्य के संदर्भ में नारीवादी विचार– नारीवादियों ने राज्य सम्बन्धी उदारवादी एवं मार्क्सवादी मान्यताओं को अस्वीकार कर दिया। क्योंकि इन विचारधाराओं में राजनीति को मूलतः सार्वजनिक क्षेत्र का विषय माना है । वही दूसरी ओर इन समाजो में महिलाओं की भूमिका निजी क्षेत्र तक ही सीमित कर दिया है । अतः यह एक विरोधाभाषी अवधारणा है जिसमे समाज के एक प्रमुख भाग की उपेक्षा की जाती है । इसी अधार पर "कैरोल पेटमैन" का मानना है कि आधुनिक राज्य जो सामाजिक समझौते के सिद्धान्त पर आधारित समाज का त्रुटिपूर्ण चित्रण करता है। पैट– मैन का मानना है कि संविदा सिद्धान्तकारो ने प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य को समान माना था परन्तु राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना के दौरान इस समझौते में पुरूषों को प्राथमिकता दी गयी । जिसके फलस्वरूप महिलाओं की स्थिति द्वितीयक हो गयी इसी आधार पर पेटमैन का मानना है कि महिलायें अभी भी प्राकृतिक अवस्था में निवास करती है ।

यहॉ एक बात उल्लेखनीय है कि नारीवादियों ने राज्य का अपना कोई पृथक सिद्धान्त निर्मित नही किया । बल्कि उन्होने वर्तमान राज्य का ही विश्लेषण किया । इसके अनुसार वर्तमान राज्य महिलाओ के साथ भेद–भावकारी व्यवहार करता है । वस्तुतः राज्य शक्ति का प्रयोग महिलाओ पर पुरूष प्रभुत्व स्थापित करने के लिए किया जाता है । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण पारिवारिक स्तर पर महिलाओं के साथ की जा रही असमानता है । महिलाओ को परिवार में मात्र बच्चों को जन्म देने वाली भूमिका के रूप में देखा जाता है।

इस प्रकार स्त्रियॉ मात्र प्रजनन की इकाई बन कर रही है ।

नारीवादी उदारवादी विचारक ने स्वतंत्रता का आशय चयन की स्वतंत्रता के रूप में बताया है वही नारीवादी विचारकों के अनुसार महिलाओं के लिए चयन की स्वतंत्रता निरर्थक है, क्योंकि उन्हे अपने शरीर पर ही स्वतंत्रता प्राप्त नही है। इसी आधार पर "कैरोल पेटमैन" ने कल्याणकारी राज्य को पितृ सत्तात्मक राज्य कहा है।

अतः नारीवादियों की यह मान्यता है कि राज्य में इस शासक चरित्र में परिर्वतन आवश्यक है। यह तभी संभव है, जबकि सार्वजनिक व निजी क्षेत्र के मध्य विभेद को समाप्त किया जाय। इसके लिए महिलाओ की स्वतंत्रता को सुरक्षित करना होगा। यह स्वतंत्रता का केवल निर्णय– निर्माण प्रक्रिया में उनकी सहभागिता बढ़ाकर संभव नही होगा बल्कि साथ ही लैंगिक आधार पर किये जा रहे भेद–भाव की समाप्ति भी आवश्यक है। जैसा कि " बुआ"की मान्यता है कि महिलाएं पैदा नही होती बल्कि बनायी जाती है। अतः नारीवाद लैंगिक आधार पर श्रम विभाजन में किये गये असमानता का विरोध करती है।

न्याय के सम्बन्ध में नारीवाद विचार –न्याय की परम्परागत उदारवादी व्याख्या के अनुसार न्याय का उद्देश्य समाज में सामन्जस्य व सन्तुलन बनाये रखना है। इसका निर्माण तार्किक व्यक्तियों द्वारा समाज में सभी समान अवसर

उपलब्ध कराने हेतु हुआ। इस मान्यता का विरोध करतें हुए नारीवादियों का मानना है कि अब तक विकास प्रकियाओ में महिलाओ का उतना लाभ नही हुआ जितना पुरूषों को हुआ है। इस क्रम में नारीवादियों ने राल्स के न्याय सिद्धान्त की मान्यता का खण्डन करते हुए संविदा सिद्धान्त से जिस न्यायपूर्ण समाज का चित्रण किया है इसमे तो महिलायें उपस्थित नहीं है क्योंकि महिलायें अभी भी प्राकृतिक अवस्था में ही हैं । अतः नारीवादियों के अनुसार उदारवादी की वैद्यता स्थापित करने वाली अवधारणा पितृ सत्तात्मक है इस क्रम में नारीवाद विचारक"ओकिन" का मानना है कि जब तक परिवार में लैंगिक अन्याय को दूर नही किया जाता तब तक समाज को न्यायपूर्ण नही माना जा सकता।

समानता के सन्दर्भ में नारीवादी विचार– नारीवादी उदारवादी समानता के सिद्धान्त को भी अपूर्ण व अधूरा मानती है । इनके अनुसार समानता का वर्तमान स्वरूप विषमता पर ही अधारित है। क्योंकि यह सार्वजनिक व निजी क्षेत्र में अन्तर नही करता। नारीवादियों के अनुसार वर्तमान समाज में मूलतः अवसर विद्यमान नही है। इसे पारिवारिक स्तर पर देखा जा सकता है। जहॉ पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त सीमित है। इसी सन्दर्भ में नारीवादी विचारक "मारिया डल्लाकोस्टा" ने घरेलू मूल्य का सिद्धान्त दिया, जिसके अन्तर्गत उन्होने कहा कि महिलाओ को उनके श्रम का मूल्य आज तक नही मिल पाया है । इसका सबसे बडा प्रमाण उनके घरेलू कार्यो को गैर उत्पादक श्रेणी में रखना है। वस्तुतः महिलाओं को प्रायः उनके निजी जीवन तक ही सीमित कर दिया गया है। यही कारण है कि"कैरल पैटमैन" ने नारी की स्थिति को अभी– भी प्राकृतिक अवस्था में माना जाता है। जहॉ उनके लिए स्वतंत्रता समानता का अधिकार व जैसी संकल्पनाएं बेमानी है।

अतः नारीवादी विचारक समानता के क्षेत्र के विस्तार के समर्थक है अर्थात जब तक निजी क्षेत्र में समानता नहीं लायी जाती हे महिलाओं की भूमिका को सार्वजनिक क्षेत्र तक विस्तार नही किया जाता तथा पितृसात्तात्मक मान्यताएं समाप्त नहीं की जाती है तब तक समानता की संकल्पना अधूरी ही रहेगी ।

विश्व के अन्य हिस्सों में सार्वजनिक क्षेत्रों में नारीवाद प्रश्न का जन्म साम्राज्यवाद विरोधी आन्दोलन तथा सामन्तीय दमन के विरूद्ध संघर्षों के संदर्भ में हुआ । इस तरह सें उत्तर औपनिवेशिक समाजों में नारीवाद हस्तक्षेप को परम्पराओं के पुराने दमन तथा उपनिवेषवाद के नये दमन से जुझना पड़ा।

विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रो तथा विभिन्न ऐतिहासिक कालों में पितृतंत्र विभिन्न स्वरूप लिये रहता है उदाहरणार्थ इतिहासकार "उमा चक्रवर्ती" ने यह उल्लेख किया है कि जनजाति की नारियों में तथा उच्च वर्गीय जातिय समानता की नारियों में पितृ तंत्र का अनुभव अलग– अलग है। यह समय व देश –काल के अनुसार परिवर्तनीय है ।

यह आज वैसा नही है जैसा कि उन्नीसवी शताब्दी में था। और भारत में वैसा नही है,जैसा कि परिश्चम के औद्योगीकृत समाज में है । नारीवादी सिद्धान्त और राजनीति में जोरदार आन्तरिक वाद–विवाद चल रहे हैं। और यह आम तौर पर माना जाता है कि अब एक मात्र नारीवाद की बजाय इस सोपान का आधार लिंग है । इस सोपान को स्त्री तथा पुरूष के मध्य प्राकृतिक विभेदो के आधार पर न्यायोचित समझा जाता है । लेकिन नारीवादी यह मानते है कि वास्तव में यह सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक शान्ति संरचनाओ पर आधारित है। जिसका दोनों यौनो के बीच जीव वैज्ञानिक सम्बन्ध से कोई लेना–देना नही है यौन (Sex)पुरूष और नारी के बीच जीव विज्ञानीय विभेद है । और लिंग (Gender)उस मौलिक विभेद के साथ जुड़े अनेक सांस्कृतिक अर्थो के विस्तृत क्षेत्र को इंगित करता है । नारीवाद के लिए विभेद करना महत्वपूर्ण हैं।

नारीवाद उग्रवादी सिद्धान्त समाजवाद व उदारवाद की मान्यताओ को नकारता है इसके अनुसार स्त्री की हित की हीन स्थिति का मूल कारण न तो अधिकारो का अभाव है। और न ही निजी सम्पत्ति की समस्या जैसा– कि उदारवादी व समाजवाादी की रूढ़िवादी संरचना में निहित है। जैसे

1. व्यक्तिगत हित ही राजनीति है। अर्थात पुरूष वर्ग का व्यक्तिगत हित ही राजनीति हो गया, परिवार और उसके कारण उत्पन्न होने वाला निजी और सार्वजनिक का अन्तर नही किया गया।
2. Human Reproducing Boilogh के अनुसार स्त्रियों को बच्चा पैदा करने और उनका लालन–पालन करने के लिए बाध्य होना पड़ता है ।
3. लिंग पर आधरित सांस्कृतिक पहचान –अर्थात् पुरूष प्रधान विचार धारा के रूप मे बन गयी।
4. पितृ सत्तात्मक व्यवस्था

इन कारणों से उग्रवादी नारीवादी सुधार के बजाय आमूल परिवर्तन पर विश्वास करता है। महिलाओं की उन्नति के लिए पुरूषवादी सामाजिक संरचना में पूर्ण परिवर्तन लाना चाहिए। यह तभी होगा जब पितृ सत्ता को तोड़ दिया जाय, और परिवार में तथा परिवार के बाहर स्वतंत्र व्यक्ति के रूप मे पहचान दी जाय। सार्वजनिक और घरेलू भेद–भाव को मिटा

दिया जाय। घरेलू श्रम को उत्पादन श्रम माना जाय। संस्कृति के क्षेत्र में लिंग तटस्थता संस्कृति का निर्माण किया जाय।

सुलांगिक फायर स्टोन ने The Direct of Sex (द डाइरेक्ट ऑफ सेक्स) में तकनीकी को स्त्री की मुक्ति का साधन बताया है। इसके अनुसार स्त्री की पुरूष निर्भरता का प्रमुख कारण उसकी अपनी शारीरिक संरचना है। जिसके कारण बच्चा को जन्म देना और लालन–पालन करना है, नयी तकनीकी जैसे टेस्ट ट्यूब बेबी व अन्य गर्भ निरोधक साधनो के प्रयोग द्वारा स्त्री अपनी संरचना पर विजय प्राप्त कर लेगी,और पुरूष पर निर्भरता समाप्त हो जायेगी।

नारीवाद पहला आन्दोलन है जिसने स्त्री के शोषण को प्रभावशाली तार्किक आधार पर लिंग –भेद को राजनीति विज्ञान का मूल विषय बना दिया । अपनी तार्किक व्याख्याओं से सार्वजनिक और घरेलू तथा बहु– आयामी शोषण के पहलुओं को उजागर किया जो नारी सशक्तिकरण के संदर्भ मे मील का पत्थर है ।

सन्दर्भ

कुमार, राधा (1993) : *दी हिस्ट्री आफ डूइंग : एन इलस्ट्रेटेड एकाउन्ट आफ मूवमेंट फार वोमेंन्स राइट एण्ड फेमिनिज्म इन इण्डिया,* 1880.1990, वर्सो बुक्स

भसीन, कमला (1976):*पार्टीसिपेटरी ट्रेनिंग फार डेवलपमेंट* एफएफएचसी,,

राजन, राजेश्वरी सुन्दर (1993) : *रीयल एण्ड इमेजिन्ड वोमेन: जेण्डर,कल्चर एण्ड पोस्टकोलोनिज्म,*रूटलेज

अली, अरूना आसफ (1991) : *रीसर्जेंस आफ इण्डियन वोमेन,* एडवेंट बुक्स